संगीत (तबला) के विषय मे PH.D. की उपाधि के हेतु संक्षेपिका

Synopsis on

'Delli evam Farukhabad Gharane ki Vidhivat Tablavadan Parampara evam Visheshta ka Tulanatmak Adhyayan'

'दिल्ली एवं फ़रुखाबाद घराने की विधिवत तबलावादन परंपरा एवं विशेषता का तुलनात्मक अध्ययन'

-:डिपार्ट्मेन्ट ओफ़ तबला:-

फ़ेकल्टी ओफ़ परफ़ोर्मिंग आर्ट्स

दि महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ओफ़ बरोड़ा

-: शोधार्थी :-

अमित सतिष खेर

रजिस्ट्रेशन नं : FOPA/52

रजिस्ट्रेशन दिनांक : 09/05/2016

-: मार्गदर्शक :-

प्रोफ़े. (डो.) अजय अष्टपुत्रे

–: दिल्ली एवं फ़रुखाबाद घराने की विधिवत तबलावादन परंपरा एवं विशेषता का तुलनात्मक अध्ययन :–

1) प्रस्तुत विषय पर शोध प्रबन्ध करने की आवश्यक्ता: (Need For Research on this Topic)

आधुनिक युग मे तबला यह वाद्य अतिशय कर्णप्रिय वाद्य रहा है। किन्तु यह कालानुसार बदलता भी रहा है। तबले के इतिहास पर विस्त्रुत रुप से चर्चा करे तो कुछ विधानें तथ्यों के आधार पर सच लगते है, तो कुछ विधाने बिल्कुल ही झुठ लगते है। किन्तु तबले के इतिहास के साथ घराने को जोड दिया जाय तो घराने का जन्म यह 300 साल पुराना ही माना जाता है। सर्वप्रथम घराने पर विचार किया जाय उससे पुर्व बाज पर विचार करना अत्यंत आवश्यक होगा। बाज यह शब्द 'बजाने'पर से आया हुआ शब्द है। अर्थात दोनो हाथों से तबले पर आघात करने से जो ध्वनि उत्पन्न हुआ उस ध्वनि का संबंध बाज से जुडा हुआ है। इतिहास यह बताता है की बाज दो प्रकार के माने गये है।

एक है तबले पर हाथ रखकर ध्वनि उत्पन्न करना ईसे बन्द बाज कहा जाता है। किन्तु बन्द बाज मे ध्वनि कि आन्दोलन संख्या बहुत कम दिखाई देती है, उसी के विचार मे खुले बाज पर विचार करने से यह कथित होता है कि हाथ को उठाकर निकाले हुई ध्वनि जिसकी आंदोलन संख्या बन्द बाज के अपेक्षा मे अधिक मात्रा मे दिखाई देती है। ईस प्रकार तबले मे दो बाज माने जाते है। प्रस्तुत विषय मे, दोनो घराने अलग-अलग बाजो पर संबंधित है। जिसमे दिल्ली बंद बाज मे तथा फ़रुखाबाद खुले बाज के अंतर्गत माना जाता है। यह शोध प्रबंध लिखने किआवश्यक्ता इसलिए भी हुई की शोधार्थी के मन मे यह प्रश्न उठा की दोनो बाजो पर क्यों न विचार किया जाय, जिसे एक हि शोध प्रबंध मे दोनो बाज एवं दोनो घरानो कि वादन परंपरा उजागर कि जाय।

ईस विषय पर शोध प्रबंध लिखने की आवश्यक्ता इसलिए मेहसुस कि गई की अभी तक ईस विषय पर शोध प्रबंध नहि लिखा है। अतः मेरे शोध प्रबंध से दोनो बाज एवं दोनो घरानो की वादन परंपरा क्रमशाः उजागर करने का प्रयास किया गया है। यह शोध प्रबंध केवल एक शोध प्रबंध हि न बनकर, समाज मे एक ठोस कार्य हो तथा ईस विषय से संगीत जगत में लोग लाभान्वित होंगे, ईसमे कोई संदेह नहि है।

2) परिकल्पना :- (Hypothesis)

फ़रुखाबाद घराने से पूर्व दिल्ही घराना का जन्म हो चुका था। किन्तु यह घराना बंद बाज के अंतर्गत सम्मेलित था। किन्तु दो घरानो के बिच मे एक नये घराने का जन्म हुआ, वह था, अजराड़ा घराना। शोधार्थी के मन मे यह विचार आया कि यह दोनो घराने बंद बाज के अंतर्गत ही माने गये है और इन दोनो घरानो कि रचना मे कही खुलापन दिखाई नहि दिया। ईसलिए हाथ को उठाकर बजनेवाला खुले बाज को उजागर किया जाए। अथाँत दोनो घरानो के बाद यदी तीसरे घराने का विचार किया जाय तो वह फ़रुखाबाद घराना ही दिखाइँ दिया। शोधार्थी के इँस कथन से एतिहास भी अपना मौन रखेगा। क्यों की दिल्ही एवं फ़रुखाबाद घराने के बाजो मे बद्लाव आया किन्तु वादनक्रम मे ज्यादातर बदलाव नही दिखाई देता। ईसलिए शोधार्थि ने दिल्ली (बंद बाज) और फ़रुखाबाद (खुला बाज) घराने को विस्तृत रुप में उजागर करने का प्रयास किया है। अनेक विध्वानो के साक्षात्कार लेकर पाद टिप्पणी (फ़ूट नोट्स) के रुप में ईसे प्रस्तुत करने का एक कष्टसाध्य प्रयास किया गया है।

3) आँकडा एकत्रित करने की विधि :-(Data Collection)

1) ईन दो घरानो से संबंधित ऐतिहासीक तथ्यों की जानकारी से संबंधित कुछ अल्प पुस्तके प्राप्त थी। जो भी पुस्तक रुप में जानकारी प्राप्त थी, वो कही प्रमाण मे तथ्यों पर आधारीत थी, तो कही जानकारी तथ्य से बिलकुल विपरीत थी। अत:इस शोध से संबंधित तथ्य प्राप्त करने के लिये आज ईन दोनो घराने के मूर्धन्य कलाकार जिवीत होने के कारण उनके साक्षात्कार के रुप मे तथ्यो के आधार पर जो सामग्री इकठ्ठी हुई, उन्ही बाबतो पर शोध प्रबंध मे पुष्टि कि गई है।

2) इसकें अतिरिक्त कुछ विध्वानो द्वारा रेडियो एवं दूरदर्शन पर साक्षात्कार/वार्तालाप के माध्यम से भी तथ्य संकलित करने का प्रयास किया गया है।

3) देश मे छपी हुई विभिन्न लेखो मे आये हुए इस घराने के विवरणों का संकलन करके तथ्य प्रस्तुत किये गये है।

4) अन्य घरानो पर जो पुस्तक प्राप्त थी, उस पर भी द्रूष्टिपात किया गया है।

5) इंटरनेट तक्नोलोजी का भी पुरा फ़ायदा उठाया गया है।

4) **पुन:विलोकन:-(Review Of Literature)**

प्रस्तुत विषय में संबंधित आँकड़े एकत्रित करने के पश्यात सब का पुन:विलोकन किया गया और ताज्य आँकडो को छोड दिया गया तथा संबंधित तथ्यों को विश्लेषणात्मक रुप मे प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

5) **उदेश्य:-(Objective)**

दिल्ही एवं फ़रुखाबाद घराना तबले के क्षेत्र मे एक अग्रगण्य स्थान रखते है। एकल तबलावादन एवं संगती कि द्रूष्टि से यह दोनो घराने प्रचलित घराने है। इन घरानो के अनेक मुर्धन्य कलाकार ऐसे हि है की जिन्होने अपना पुरा जीवन तबले के प्रति समर्पित किया है, उसी कारण यह दोनो घराने आज जिवित है। दिल्ही घराने को तो पिता माना है। किन्तु अजराडा के बाद यदि कोई नाम लिया जाता है, तो वह है, फ़रुखाबाद घराना। इन दोनो घरानो के विधिवत तबलावादन अनुसार पेशकार, कायदें, रेलें, टुकडे, गतें, चक्रदार, फ़रमाइशी चक्रदार, जैसि अनेक विविध बन्दिशो को लिपिबद्ध करके उसे उजागर किया गया है तथा उसमे रहा हुआ सौंदर्य, निकास, परंपरागत रचनायें तथा अन्य तालों की रचनायें भी उजागर करने का प्रयास किया गया है। और जन मानस, ईन दोनो घरानो का केवल तबलावादन सुनकर संतुष्ट न हो किन्तु समाज का हर प्रेक्षक इस भलिभाती को जाने और ईन दोनो घराने के प्रति जानकारी प्राप्त कर उसे अपने चिंतन से उसे आत्मसात करके तबला सिखे, यहि मेरा उदेश्य है। क्रियात्मक पक्ष मे, रियाज और तकनिको के माध्यम से स्वतंत्रवादन को उजागर करने का मेरा एक अत्यंत कठिन प्रयास रहा। अनेक विद्वान कलाकारो तथा वर्तमान मे जिवित समर्थ गुरु एवं शिक्षको ने बनायी एवं बजाई हुई रचनाओ को लिपिबध्ध किया गया है। जो योगदान घरानेदार बुर्जुगो का रहा है वह तो अमूल्य हे हि किन्तु ईन्ही दो घराने के विचार और मूल्यो को कायम रखकर आज के गुणि तबलावादक ईस कार्य को आगे ले जा रहे है। अत:मेरा शोध प्रबंध आनेवाले विद्यार्थीयो को, शिक्षकों को एवं विभिन्न संस्थाओ को निश्चित हि लाभान्वित हो, यही मेरा मुख्य उदेश्य है।

6) **शोध कार्य एवं योजना:- (Research Methodology)**

प्रस्तुत शोध प्रबंध एँतिहासिक तथ्यो का संकलन कर इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है कि यह तथ्य वैज्ञानिक तो है अपितु नविन तथ्य जो रोमांचक महसूस हुए, उन्हे प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। ईसमे यह भी प्रयास किया गया है कि इस कार्य पद्धति के अंतर्गत तथ्यो का सरलीकरण विवेचन हो। जैसा की कहाँ जहा चुका था कि इस क्षेत्र के संबंधित कही विध्वानो का साक्षात्कार करके जो जानकारी प्राप्त हुई है, उसे उजागर करने का मेरा मुख्य उदेश्य है। इसके अतिरिक्त विषय कि मांग के अनुसार तथ्यो को

जुटाने के लिए इस घरानों से संबंधित देश-विदेश के कलाकारो एवं गुरुओ के जिवनव्रुत प्रस्तुत कर उनका भी सांगितिक योगदान प्रस्तुत किया गया है।

7) स्थायी अध्याय :- (Chapters)

ईस शोध प्रबन्ध को 5 स्थायी अध्याय मे विभाजित किया गया है।

1) दिल्ली घराने का उदभव एवं विकास :-

तबले के घरानो में सर्वप्रथम घराना दिल्ली घराना माना गया है। जो पश्चिम बाज के अंतर्गत आता है। इस घराने की नींव उ. सिद्धार्थ खाँ ढारी ने डाली। इस घराना का उदभव लगभग इस 1700 के आसपास माना जाता है। उ.सिद्धार्खाँके तीन शिष्यों मे उ.रोशन खाँ, उ.कल्लु खाँ, उ.तुल्लन खाँ तथा तीन पुत्रो मे उ.बुगरा खाँ, उ.घसीट खाँ तथा तिसरे पुत्र का नाम अज्ञात रहा जो इस घराने की परंपरा मे विशेष महत्व रख्ते है। उ.सिताब खाँ इस घराने के प्रसिद्ध कलाकार हुए। आगे चलकर इस परंपरा मे उ.नत्थू खाँ हुए। स प्रकार कालानुसार इसमे विकास होता गया। अत :ईस अध्याय में दिल्ली घराने कि भौगोलिक द्रूष्टि से लेकर दिल्ली शहर का ईतिहास तथा तबले के बाज, सिध्दार खाँ कि चार परंपरा के बारे मे और दिल्ली घराने का विकास, उद्देश्य, आवश्यकता, प्रयोग और सफ़लता के बारे मे शोधार्थि ने गहन चिंतन कर अलग-अलग मुद्दो पर अपने विचार प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

2) फ़रुखाबाद घराने का उदभव एवं विकास :-

तबले के घरानो मे क्रमानुसार इस घराने का तीसरा क्रम आता है। यह घराना पुरब बाज के अंतर्गत आता है। इस घराने के सर्वप्रथम तबलावादक उ.विलायत अली खाँ हुए, जिनको हाजी विलायत अली खाँ के नाम से जाना जाता है। उ. हाजी साहब ने अनेक विशिष्ट गतो की रचना की, जो आज भी विध्वानो के बिच आदर से पढ़ि जाती है। हाजी साहब के पुत्र उ.हुसैन अली खाँ तथा शिष्य उ.मुनिर खाँ इस घराने के सुविख्यात तबलावादक हुए। जिन्होंने इस घराने को आगे जाकर बहुत परीवर्तन और विकास किया। इस

घराने के मे उ.अहमदजान थिरकवाँ, उ.अमिरहुसैन खाँ, उ.जहाँगीर खाँ तथा उ.शेख दाउद खाँ साहब का अमूल्य योगदान रहा है।

3) दिल्ही एवं फ़रुखाबाद घराने में एकल तबलावादन का तुलनात्मक क्रमबध्द प्रस्तुतिकरण (शास्त्र एवं क्रियात्मक द्रूष्टिकोण से) : –

ईस अध्याय में दोनो घरानो के तुलनात्मक द्रूष्टिकोण से विस्तारक्षम रचना और अविस्ताक्षम रचनाओ को विधिवत तबलावादन पध्धिति अनुसार, पं भातखंडे ताल लिपी में लिपिबध्ध करने का प्रयास किया गया है।

4) दिल्ही एवं फ़रुखाबाद घराने कि नविन बंदिशो का रचनाक्रम और रचनाकार : –

दोनो घरानो के नियम, बाज और विशिष्ट बोलो को ध्यान मे रखते हुए, अनेक तबलवादको ने घराने को आगे बढ़ाने के हेतु अनेक नविन बंदिशो कि रचना की है। उसे साक्षात्कार रुप से लेकर लिपिबद्ध करने का अत्यंत कठिन प्रयास किया गया है। शोधार्थि का कथन है कि ईसी कारण यह दोनो घराने आगे बढ रहे है।

5) दिल्ही एवं फ़रुखाबाद घरानो के कलाकारो का योगदान : –

इन दोनो घरानो मे जिन मुर्धन्य कलाकारो ने वास्तविक रुप मे घरानो को जीवित रखने मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है उन्ही कलाकारो को आकाराधि क्रम मे समावेश करने का शोधार्थी का अत्यंत कठिन प्रयास रहा है।

8) **<u>संदर्भसुचि :-</u> (Bibliography)**

1) ताल परिचय (लेखक : प्रो. गिरिश्चन्द्र श्रीवास्तव)

2) ताल प्रकाश (लेखक : श्री.भगवनशरण शर्मा)

3) तबलावादन मे निर्हित सौंदर्य (लेखक : पं. सुधिर माईनकर)

4) तबला (लेखक : पं. अरविंद मुळगाँवकर)

5) तबलावादन : कला और शास्त्र (लेखक : पं. सुधिर माईनकर)

6) ताल कोश (लेखक : प्रो. गिरिश्चन्द्र श्रीवास्तव)

7) तबला पुराण (लेखक : पं. विजय शंकर मिश्र)

8) तबले की कला-सारभूत, परंपरा एवं स्रुजनात्म्कता (लेखक : प्रो. सुधिरकुमार सक्सेना)

9) दोनो घराने के मूर्धन्य कलाकारो के साक्षात्कार

10) आवर्तन (लेखक : पं. सुरेश तळवलकर)

11) पदव्युत्तर तबला (लेखक : श्री.आमोद दंडगे)

12) तबले का उदगम एवं दिल्ली घराना (लेखक : डो. कुमार ऋषितोष)

13) तबले पर दिल्ली पूरब (लेखक : स्व. पं.सत्यनारायण वशिष्ठ)

14) ताल दर्शन मंजरी (लेखक : राम नरेश राय)

15) ताल निनाद (लेखक : विजय किरपेकर)

16) संगीत कला विहार अंक (संपादक : अ.भा.गां.म.वि.मंड़ल, मुँबई)

17) पखवाज और तबले के घराने एवं परंपराये (लेखक :डो. आबान मिस्त्री)

18) इंटरनेट अधिक्रूत वेबसाई

19) तबले कि बंदिशे (लेखक :डो. आबान मिस्त्री)

9) उपसंहार : – (Conclusion)

प्रस्तुत शोध प्रबंध मे दिल्ही एवं फ़रुखाबाद घराने का उदभव, विकास उसके परंपरागत वादनविधि, नविन रचना के प्रस्तुतिकरण के अंतर्गत पुस्तके तथा मूर्धन्य कलाकारो के साक्षात्कार के जरिए जो भी तथ्य सामने आये है और जो भी निष्कर्ष परिणामस्वरूप उद्‌घटित हुए है उसका विवरण प्रस्तुत करने का शोधार्थी ने प्रयास किया है।